P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जनपद मऊ की व्यावसायिक संरचना एवं परिवर्तन का विश्लेषणात्मक अध्ययन

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य मऊ जनपद में व्यावसायिक संरचना एवं परिवर्तन पर प्रकाश डालना है। द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित यह लेख प्रस्तुत किया गया है और इसे सांख्यिकीय आंकड़ों, मानचित्रों एवं आरेखों द्वारा प्रस्तुत किया गया है। किसी भी देश की जनसंख्या या मानव संसाधन उसकी सबसे बड़ा पूंजी होती है। जनसंख्या के उपयुक्त आकार और श्रेष्ठ गुणात्मक विशेषताओं के आधार पर ही किसी देश का विकास निर्भर है। व्यवसाय की संकल्पना एक गत्यात्मक विचार है जो देश–काल के अनुसार परिवर्तनशील होता है। आधुनिक समाज में श्रम विभाजन, कार्यात्मक विशिष्टीकरण, परिवर्तन की नवीन विधाओं तथा प्रचलित विचारधारा के प्रभाव से युक्त अधिकांश जनों का अपनी जीविका की प्राप्ति तथा एक निश्चित सामाजिक स्तर को कायम रखने हेतु एक विशिष्ट और अपेक्षाकृत अविराम क्रिया में संलग्न होना व्यवसाय के प्रमुख लक्षण हैं। इसके आर्थिक और सामाजिक पक्ष अधिक महत्वपूर्ण होते है। अध्ययन क्षेत्र पूर्वी उत्तर प्रदेश के आजमगढ. मण्डल में मध्य गंगा ,घाघरा दोआब के मध्य में अवस्थित है। जनपद का कुल क्षेत्रफल 1727.9 वर्ग किमी है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 2205968 है। जनपद में कुल कर्मकर जनसंख्या का कृषक (14. 64 प्रतिशत), कृषक श्रमिक (9.64 प्रतिशत), पारिवारिक उद्योग (12.53 प्रतिशत), अन्य कर्मकर (20.07 प्रतिशत) एवं सीमांत कर्मकर (43.12 प्रतिशत) है।

मुख्य शब्द : मऊ जनपद, व्यावसायिक संरचना।

मनिराम यादव
शोध छात्र,
भूगोल विभाग,
डी.ए.वी. कालेज,
कानपुर

प्रभाशंकर श्रीवास्तव
एसोशिएट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
डी.ए.वी. कॉलेज,
कानपुर

प्रस्तावना

जनसंख्या किसी भी राष्ट्र के लिए अमूल्य संसाधन है जो वस्तुओं व सेवाओं का उत्पादन एवं वितरण करती है और उसका उपभोग भी करती है। मानव को संसाधनो का सृजनकर्त्ता और उपभोक्ता भी कहते हैं। इस तरह से देश के आर्थिक, सामाजिक ,विकास का सम्वर्द्धन करती हैं इसीलिए तो जनसंख्या को देश के लिए साध्य और शाधन दोनो माना जाता हैं लेकिन हर किसी चीज की एक सीमा होती है और उसका उल्लंघन सर्वथा घातक ही होता है। जिस देश के साधन–संसाधन वहां के आबादी के सापेक्ष होते हैं उसे एक अनुकूल या आदर्श जनसंख्या की संज्ञा दी जाती हैं पर विपरित स्थिति में जब उपलब्ध संसाधन देश की जनसंख्या को संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त नहीं होते तो इसे जनाधिक्य की संज्ञा दी जाती है (कुमार, 2007) । भारत के जनसंख्या के सम्बन्ध में यह कहना निहायत ही गलत नहीं होगा।

आर्थिक दृष्टिकोण से जनसंख्या के व्यावसायिक संरचना का विशेष महत्व हैं। जिसका आशय कुल कार्यशील जनसंख्या का विभिन्न व्यावसायिक वर्गो में वितरण से हैं। मानव जब किसी आर्थिक कार्य में लगा रहता हैं तो उसे उसका व्ययसाय कहते हैं अर्थात जीविकोपार्जन हेतु की जाने वाली आर्थिक क्रियाकलापों को व्यवसाय कहते हैं जिनसे वह आय प्राप्त करता हैं। सम्पूर्ण व्यवसायों (आर्थिक क्रियाओं) को प्राथमिक, द्वितीयक ,तृतीयक,चतुर्थ आदि वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है। प्राथमिक वर्गो में उन क्रिया कलापो या व्यवसायों को सम्मलित करते हैं जो प्रकृति से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित होते जिन्हें प्राथमिक व्यवसाय कहा जाता हैं जैसें–आखेट,मत्स्यपालन, पशुचारण एवं लकड़ी काटना, जंगली वस्तुओं को एकत्रित करना, खनन, कृषि आदि। द्वितीयक वर्ग में ऐसे व्यवसायों को शामिल किया जाता हैं जो प्राथमिक उत्पादनो पर आधारित रहते है जिन्हें द्वितीयक व्यवसाय भी कहा जाता हैं जैसे–विनिर्माण उद्योग, गृह निर्माण, सड़क निर्माण आदि इसके उदाहरण हैं तृतीयक व्यवसाय के अन्तर्गत उन क्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है जिसके द्वारा प्रत्यक्ष रूप से कोई

उत्पादन नही होता किन्तु वे परोक्ष रूप से उत्पादन में सहायक होती है। इसके अन्तर्गत परिवहन, संचार, व्यापार, वाणिज्य तथा अन्यान्य सेवाओं जैसे शिक्षा, प्रशासन, चिकित्सा, मनोरंजन, प्रतिरक्षा आदि को सम्मिलित किया जाता है। आधुनिक काल में कला, साहित्य, विज्ञान, तकनीक, शोध आदि से सम्बन्धित क्रियाओं को व्यवसाय के चतुर्थ वर्ग में रखा जाने लगा है जिसे चतुर्थक व्यवसाय की संज्ञा दी जाती है।

किसी व्यक्ति विशेष के व्यवसाय से अभिप्राय उसके व्यापार, व्यवसाय तथा कार्य से है। किसी समाज का व्यावसायिक संगठन कई कारकों का परिणाम है। समाज को आमतौर पर व्यवसायिक संगठन के आधार पर तीन भागों मे विभक्त किया जाता है। प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीयक सभ्यता *(चांदना, 2002)*। सम्पूर्ण विश्व औद्योगिक क्रांति से पूर्व प्राथमिक क्रिया कलापों में संलग्न था द्वितीयक तथा तृतीयक क्रिया कलापों का वृहद स्तर पर चलन हाल ही का है। अर्थात लगभग 2 से 3 शताब्दी पूर्व आज भी विकासशील विश्व का अधिकांश भाग प्राथमिक क्रिया कलापों में संलग्न है। जिसमें उनकी क्रियाशील जनसंख्या का मुख्य भाग लगा है *(ट्रिवार्था,1959)*। जनसंख्या दबाव का उदय मानव की संख्या और उसकी आवश्यकताओं तथा क्षेत्र विशेष के भौतिक और मानवीय संसाधनों के असन्तुलन का प्रतिफल है*(क्लार्क, 1970)*।

किसी देश के आर्थिक विकास के स्तर और उसकी व्यावसायिक संरचना में घनिष्ट सम्बन्ध होता है। आर्थिक विकास की प्रारम्भिक अवस्था में अर्थात जहाँ आर्थिक विकास कम हुआ होता है। वहाँ की अधिकांश जनसंख्या प्राथमिक व्यवसायों में कार्यरत होती है। किन्तु अर्थव्यवस्था जैसे–जैसे आर्थिक विकास के पथ पर अग्रसर होती जाती है। प्राथमिक व्यवसायों में संलग्न व्यक्तियों का अनुपान क्रमशः घटता जाता है। यही कारण है कि विकसित देशों में प्राथमिक उद्योगों (कृषि, पशुपालन, मत्स्य पालन, वनोद्योग आदि) में संलग्न लोगों का प्रतिशत बहुत कम हैं जबकि विकासशील देशों में अधिकांश कार्यशील जनसंख्या कृषि आदि प्राथमिक कार्यों में संलग्न है जबकि विकसित देशों की अधिकांश कार्यशील जनसंख्या द्वितीयक एवं तृतीयक उद्योगों में कार्यरत है। इससे स्पष्ट है कि आर्थिक विकास के साथ–साथ जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना में भी परिवर्तन होता रहता है *(मौर्य, 2009)।*

जनसंख्या के व्यावसायिक संरचना से जीविकोपार्जन की दशाएँ प्रकट होती हैं क्योकि इससे क्षेत्र के विकास स्तर का बोध होता हैं, भूमि एवं अन्य संसाधनो पर जनसंख्या के दबाव का आकलन होता हैं (सिंह, 2017)।

अध्ययन का उद्देश्य

1. व्यावसायिक संरचना का विश्लेषण करना।
2. व्यावसायिक संरचना में वृद्वि की विवेचना करना।

विधितंत्र एवं आंकड़ा संग्रहण

प्रस्तुत शोधपत्र में निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए द्वितीयक आंकड़ों को आधार बनाया गया है। द्वितीयक आंकडों का आधार प्रकाशित व अप्रकाशित राजकीय एवं गैरराजकीय स्रोतों को बनाया गया है। वितरण प्रारूप तथा वृद्धि की प्रवृत्ति को दर्शाने के लिए सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है। स्पष्टता, सहजता और सरलता के लिए यथासंभव मानचित्रों का भी प्रयोग किया गया हैं। जिसे बनाने के लिए मैप इन्फो 8.5 साफ्टवेयर का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

भौगोलिक पर्यावरण में अध्ययन क्षेत्र की स्थिति एवं विस्तार में यह जनपद मध्य गंगा के मैदान में पूर्वी उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ मण्डल का एक विकासोन्मुख जनपद है। यह $25^{0}47^{|}$ उत्तरी अक्षांश से $26^{0}17^{|}$ उत्तरी अक्षांश के मध्य तथा $83^{0}17^{|}$ पूर्वी देशान्तर से $84^{0}52^{|}$ पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। इसके उत्तर मे गोरखपुर व देवरिया, पूर्व मे बलिया, पश्चिम मे आजमगढ़ तथा दक्षिण में गाजीपुर जनपद की सीमाओं से लगा हुआ है। यह जनपद मण्डल मुख्यालय से 46 किमी0 पूर्व में स्थित है। इस जनपद का क्षेत्रफल 1727.9 वर्ग किमी0 एवं उत्तर–दक्षिण की लम्बाई 48 किमी0 और पूर्व–पश्चिम की लम्बाई 42.00 किमी0 है। अध्ययन क्षेत्र की समुद्र तल से ऊचाई 78 मीटर हैं।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

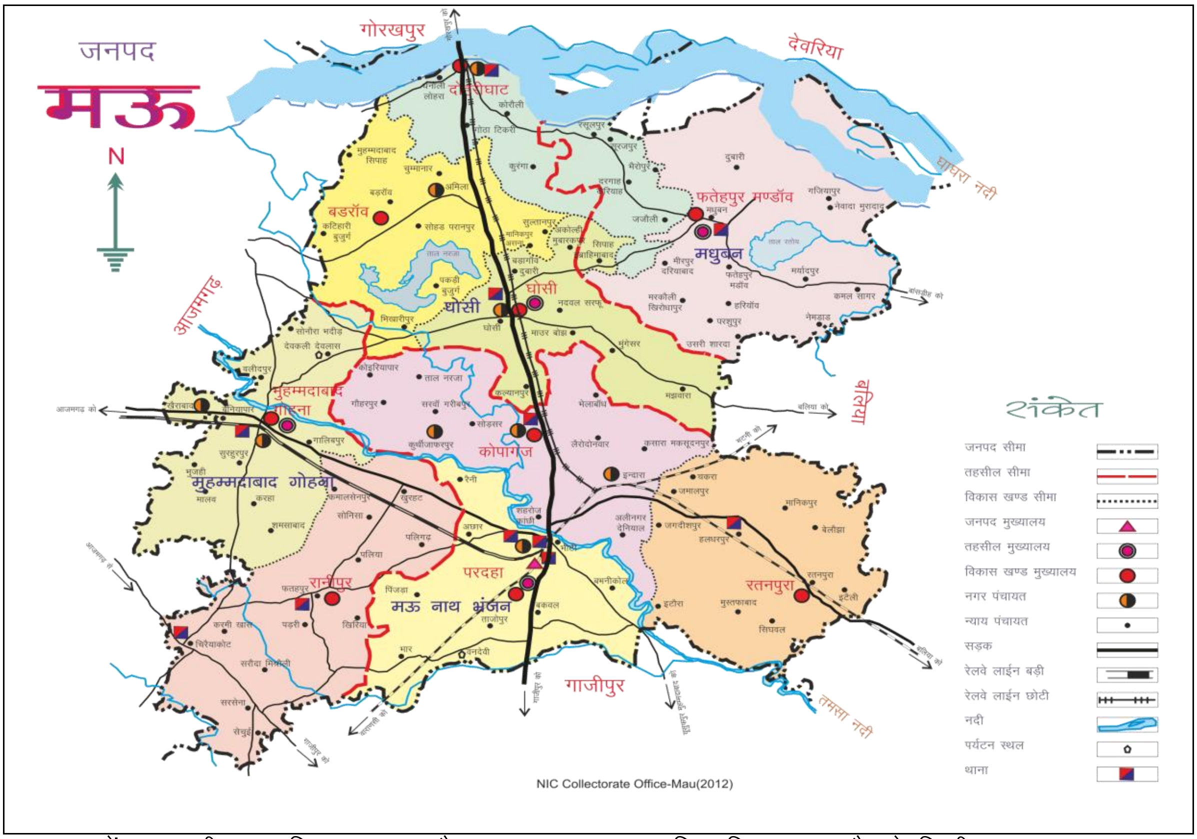

इसमें 4 तहसील, 9 विकास खण्ड है। 29 न0 राष्ट्रीय राजमार्ग जनपद मुख्यालय के बीच से गुजरता है। 2011 की जनगणना के अनुसार सम्पूर्ण जनपद कुल जनसंख्या 22,05,968 लाख जिसमें 1114709 लाख पुरूष एवं 1091259 लाख महिला जनसंख्या है। लिंगानुपात 978 एवं जनसंख्या धनत्व 1287 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 है। इस जनपद की ग्रामीण जनसंख्या 77.34 प्रतिशत व 22.66 प्रतिशत नगरीय जनसंख्या है। यहाँ की औसत साक्षरता 75.10 प्रतिशत हैं।

व्यावसायिक संरचना

आर्थिक दृष्टिकोण से जनसंख्या के व्यावसायिक संरचना का विशेष महत्व होता हैं क्योंकि इससे जनसंख्या के जीविकोपार्जन की दशाएँ प्रकट होती हैं। क्षेत्र के विकास स्तर का बोध होता हैं, भूमि एवं अन्य संसाधनों पर जनसंख्या के दबाव का आकलन होता हैं (सिंह ,2017)। किसी क्षेत्र मे जनसंख्या के व्यवसायिक वितरण को ज्ञात करने से पूर्व सम्पूर्ण कार्यशील जनसंख्या का ज्ञात होना अति आवश्यक है। सम्पूर्ण जनसंख्या को दो भागो में विभाजित किया जाता है। 1– कार्य करने वाली जनसंख्या 2– कार्य न करने वाली जनसंख्या

कार्य करने वाली जनसंख्या में उन लोगो को सम्मिलित किया जाता है जो किसी रोजगार, व्यवसाय, उद्योग तथा नौकरी आदि में संलग्न है। इसके विपरीत कार्य न करने वाली जनसंख्या में उन व्यक्तियों को शामिल किया जाता है जो किसी प्रकार का उत्पादन कार्य नही करते है। जैसे बच्चे, बूढ़े, पराश्रयी आदि चिकित्सालयों, जेलों तथा अनाथालयों में रहने वाले व्यक्तियों को भी कार्य न करने वालो मे शामिल किया गया है। अध्ययन क्षेत्र एक कृषि प्रधान क्षेत्र हैं, जहाँ की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण है, जिससे व्यावसायिक संरचना में कृषि सम्बन्धित कार्यों की प्रधानता हैं। मऊ जनपद के व्यावसायिक संरचना को मुख्यत; कृषक, कृषि मजदूर, पारिवारिक उद्योग, अन्य कर्मकर एवं सीमांत कर्मकर में बाटा गया है।

कृषक

कृषक कार्यशील जनसंख्या का वह व्यक्ति होता हैं जो स्वयं की भूमि, सरकार से पट्टे पर प्राप्त भूमि ,या अन्य प्रकार से जैसे – किसी दूसरे व्यक्ति या संस्था से बटाई या किराये पर ली गयी भूमि पर स्वयं खेती करता है या अपने देखरेख में उस जमीन पर कृषि करवाता हैं। इसमें कृषक के परिवार के सदस्यों को भी कृषक माना जाता है जो खेती करवाते हैं। जनपद मऊ में कुल कार्यशील जनसंख्या का 14.64 प्रतिशत भाग कृषकों का है। विकासखण्ड स्तर पर सबसे अधिक कृषक रानीपुर 24. 23 प्रतिशत तथा सबसे कम रतनपुरा 14.70 प्रतिशत है। 2011 में रानीपुर मे सबसे अधिक कृषकों की संख्या का कारण उपजाऊ समतल भूमि एवं कृषि के लिए आवश्यक संसाधनों की सुलभता पूर्वक उपलब्धता है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तालिका 1 – अ जनपद मऊ : व्यावसायिक संरचना का वितरण 2011 (प्रतिशत)

विकासखण्ड	कृषक	कृषक श्रमिक	पारिवारिक उद्योग	अन्य कर्मकर	सीमांत कर्मकर	कार्यशील जनसंख्या	अकार्यशील जनसंख्या
दोहरीघाट	20.19	9.95	3.02	19.98	46.85	28.08	71.92
फतेहपुर मडांव	16.86	13.71	3.44	17.32	48.66	30.03	69.97
घोसी	19.47	7.63	3.19	17.30	52.40	29.85	70.15
बडरांव	15.44	10.90	2.52	12.60	58.51	32.68	67.32
केपागंज	16.29	11.88	7.18	15.85	48.79	32.02	67.98
परदहा	18.31	14.70	3.96	22.15	40.86	33.26	66.74
रतनपुरा	14.70	9.18	2.29	13.91	59.90	31.78	68.22
मुहम्दाबाद गोहना	19.84	16.12	4.40	14.72	44.90	30.86	69.14
रानीपुर	24.23	11.61	3.96	14.74	45.45	31.67	68.33
योग ग्रामीण	18.39	11.80	3.86	16.30	49.65	31.16	68.84
योग नगरीय	2.46	2.60	40.69	32.33	43.12	31.53	68.47
योग जनपद	**14.64**	**9.64**	**12.53**	**20.07**	**43.12**	**31.53**	**68.47**

स्रोत–जिला सांख्यिकी पत्रिका (2011)

तालिका 2 –ब जनपद मऊ : व्यावसायिक संरचना का वितरण 1991 (प्रतिशत)

विकासखण्ड	कृषक	कृषक श्रमिक	पारिवारिक उद्योग	अन्य कर्मकर	सीमांत कर्मकर	कार्यशील जनसंख्या	अकार्यशील जनसंख्या
दोहरीघाट	42.06	20.80	3.70	8.36	25.08	37.75	62.25
फतेहपुर मडांव	43.86	23.10	2.74	9.14	21.16	34.21	65.79
घोसी	49.50	15.18	4.02	7.74	23.57	37.61	62.39
बडरांव	50.29	14.87	2.93	6.91	24.99	35.65	64.35
कोपागंज	46.86	24.63	8.02	7.59	12.89	32.83	67.17
परदहा	41.29	20.43	11.21	10.80	16.25	35.85	64.15
रतनपुरा	56.26	22.35	4.02	8.97	8.40	28.98	71.02
मुहम्दाबाद गोहना	48.57	14.00	13.82	10.28	13.33	32.16	67.84
रानीपुर	54.47	13.83	6.02	8.58	17.13	33.26	66.74
योग ग्रामीण	47.87	18.77	6.32	8.72	18.32	34.16	65.84
योग नगरीय	6.14	7.73	57.32	28.96s	3.85	28.59	71.41
योग जनपद	**41.81**	**16.58**	**13.73**	**11.66**	**16.22**	**33.22**	**66.78**

स्रोत–जिला सांख्यिकी पत्रिका (1995)

तालिका 2 – जनपद मऊ : विकासखण्डवार जनसंख्या के सापेक्ष कुल कर्मकर

विकास खण्डवार	कुल कर्मकर की संख्या (1991)	कुल कर्मकर की संख्या (2011)	कुल जनसंख्या (1991)	कुल जनसंख्या (2011)
दोहरीघाट	48572	49050	128672	174632
फतेहपुर मडांव	51749	65445	151268	217901
घोसी	39479	47177	104958	158041
बडरांव	45596	62073	127877	189920
कोपागंज	46189	69613	140666	217370
परदहा	45832	51690	127842	155391
रतनपुरा	35070	58964	120991	185555
मुहम्दाबाद गोहना	46716	53843	145266	174481
रानीपुर	51308	73937	154247	233469
योग ग्रामीण	410511	531792	1201787	1706760
योग नगरीय	69751	163746	243995	499208
योग जनपद	**480262**	**695538**	**1445782**	**2205968**

स्रोत–जिला सांख्यिकी पत्रिका (1991 व 2011) एवं भारतीय जनगणना सार (1991 व 2011)

कृषक श्रमिक

कृषक श्रमिक, कर्मकर जनसंख्या का वह भाग होता है जो दूसरे व्यक्ति के खेत में काम करता है और उसके बदले में नगद ,अनाज,या कोई वस्तु प्राप्त करता है कृषक श्रमिक कहलाता हैं। मऊ जनपद में कुल कर्मकर जनसंख्या का 9.64 प्रतिशत भाग कृषक श्रमिकों का हैं। कृषि में नये तकनीकों का प्रयोग, कृषि में अस्थाई रोजगार, न्यूनतम मजदूरी, कठिन काम, नौकरी एवं शिक्षा के लगाव तथा सरकार द्वारा सामाजिक–आर्थिक उत्थान हेतु संचालित विविध ग्रामीण विकास कार्यक्रर्मो के चलते इनका प्रतिशत कम होता जा रहा हैं। विकास स्तर पर अध्ययन से पता चलता है कि सबसें अधिक कृषक श्रमिकों की संख्या मुहम्मदाबाद गोहना(16.12 प्रतिशत) जबकि सबसे कम प्रतिशत विकासखण्ड घोसी में (7.63 प्रतिशत) पाया जाता है। 2011 में यहाँ पर सर्वाधिक कृषक श्रमिको की संख्या का मुख्य कारण अन्य व्यवसायों की अनुपलब्धता था।

पारिवारिक उद्योग

पारिवारिक उद्योग के अर्न्तगत उन क्रियाशील जनसंख्या को शामिल किया जाता है जो परिवार के सदस्यो द्वारा कच्चेमाल पर आधारित उद्योगो का संचालन करते है जैसे सूत कताई, साड़ी बनाना, मसाला बनाना, आटा चक्की, बीडी उद्योग, साबुन उद्योग, खाण्डसारी उद्योग,, कागज का प्लेट बनाना, पत्तल आदि। जनपद मऊ में 2011 की जनगणना एवं आर्थिक समीक्षा 2011 के अनुसार कार्यशील जनसंख्या का 12.53 प्रतिशत लोग पारिवारिक उद्योगों में संलग्न है। विकास खण्ड स्तर पर अध्ययन से पता चलता है कि सबसे अधिक कोपागंज 7. 18 प्रतिशत एवं सबसें कम रतनपुरा विकास खण्ड में 2.29 प्रतिशत है (तालिका 1अ)। यहां पर सर्वाधिक पारिवारिक उद्योगों का कारण कच्चें मालों का आसानी से उपलब्धता है।

अन्य कर्मकर

अन्य कर्मकर, ऐसी क्रियाशील जनसंख्या जो सरकारी नौकरी , उद्योगो, यातायात, व्यापार एवं वाणिज्य आदि क्रियाओं में लगे रहते है अन्य कर्मकर के अन्तर्गत रखा जाता है। अध्ययन क्षेत्र में 2001 की जनगणना एवं आर्थिक समीक्षा के अनुसार 20.07 प्रतिशत अन्य कर्मकर का है । विकासखण्ड स्तर पर अध्ययन से पता चलता है कि सबसे अधिक संख्या परदहा 22.15 प्रतिशत जबकि सबसे कम संख्या बडॅराव 12.60 प्रतिशत विकास खण्ड की है। यहां पर सबसे अधिक होने का मुख्य कारण मुख्यालय के समीप होना है ।

सीमांत कर्मकर

सीमान्त कर्मकर से आशय ऐसे क्रियाशील जनसंख्या से है जो वर्ष के छः माह या उससे भी कम समय तक कार्य करते है सीमान्त कर्मकर कहलाते है। जनपद में 2011 के जनगणना एवं सांख्यिकी पत्रिका के अनुसार कुल कर्मशील जनसंख्या के 41.12 प्रतिशत सीमान्त कर्मकर पाये जाते है (तालिका 1अ) के अध्ययन से पता चलता है कि रतनपुरा विकासखण्ड में 59.90 प्रतिशत सबसे अधिक एवं परदहा मे 40.86 प्रतिशत न्यूनतम सीमान्त कर्मकर पाये जाते है। इस प्रकार (1991–2011) के बीच सीमान्त कर्मकरो की संख्याओं में वृद्वि हुई है जिसका मुख्य कारण सरकार द्वारा सचांलित जवाहर रोजगार योजना, मनरेगा, स्वर्ण जयतीं रोजगार ग्राम विकास योजना एवं पर्यावरणीय, सामाजिक कारण आदि हैं।

समस्त कार्यशील जनसंख्या

समस्त कार्यशील जनसंख्या का अभिप्राय कुल जनसंख्या में काम करने वाली जनसंख्या से है यहा 2011 की जनगणना के अनुसार 31.53 प्रतिशत जनसंख्या क्रियाशील थी। विकासखण्ड स्तर पर अध्ययन से पता चलता है कि सर्वाधिक कार्यशील जनसंख्या परदहा (33.26 प्रतिशत), तथा सबसे कम कार्यशील जनसंख्या दोहरीघाट (28.08 प्रतिशत), मे थी (तालिका 1 अ)।

समस्त अकार्यशील जनसंख्या

अकार्यशील जनसंख्या का आशय कुल जनसंख्या में काम न करने वाली जनसंख्या से है जो किसी प्रकार का उत्पादन नही करती है यहा 2011 की जनगणना के अनुसार 68.47 प्रतिशत जनसंख्या अक्रियाशील थी तथा 31.53 प्रतिशत जनसंख्या क्रियाशील थी। अध्ययन क्षेत्र में विकास खण्डस्तर पर अध्ययन से पता चलता है कि सर्वाधिक अकार्यशील जनसंख्या दोहरीघाट (71.92 प्रतिशत),तथा सबसे कम अकार्यशील जनसंख्या परदहा मे (66.74 प्रतिशत) पायी जाती है।

व्यावसायिक संरचना में परिवर्तन

अध्ययन क्षेत्र में विगत बीस वर्षों (1991– 2011) के मध्य व्यावसायिक संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। (तालिका संख्या 3) से स्पष्ट है कि जनपद में कृषकों की संख्या में –49.44 प्रतिशत का ह्रास हुआ है। जिसका कारण कृषि के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में रोजगार की अधिकता, शहरी क्षेत्रों का आकर्षण, यन्त्रीकरण से भू–खण्डों पर रोजगार के अवसरों में कमी है। विकासखण्ड स्तर पर देखा जाय तो सभी विकासखण्डो में ह्रास हुआ है। जिसमें सर्वाधिक कृषक परिवर्तन बडरॉव विकासखण्ड में –58.19 प्रतिशत हैं एवं न्यूनतम प्रतिशत परिवर्तन –35.87 प्रतिशत रानीपुर विकासखण्ड में हैं(तालिका–2)। कृषक श्रमिकों की संख्या में –15.82 प्रतिशत परिवर्तन में कमी हुई है। सर्वाधिक वृद्वि मुहम्मदाबाद गोहना विकासखण्ड में 32.82 प्रतिशत परिवर्तन हैं तथा सर्वाधिक कमी दोहरीघाट विकासखण्ड –51.71 प्रतिशत परिवर्तन हैं (तालिका–3)। पारिवारिक उद्योगों में संलग्न जनसंख्या में 32 प्रतिशत की वृद्वि हुई है जिसका मुख्य कारण क्षेत्र में लघु एवं कुटीर उद्योगों का निरन्तर विकसित होना है (कच्चे माल की आपुर्ति)। विकासखण्ड स्तर पर सर्वाधिक फतेहपुर मडांव में 58.60 प्रतिशत की वृद्वि हुई है जबकि मुहम्मदाबाद गोहना में –63.28 प्रतिशत की कमी हुई हैं (तालिका–2)।

तालिका–3 जनपद मऊ : व्यावसायिक संरचना में परिवर्तन का प्रतिशत 1991–2011

विकासखण्ड	कृषक परिवर्तन 1991–011	कृषक श्रमिक परिवर्तन 1991–011	पारिवारिक उद्योग परिवर्तन 1991–011	अन्य कर्मकर परिवर्तन 1991–011	सीमांत कर्मकर परिवर्तन 1991–011	कार्यशील परिवर्तन 1991–011
दोहरीघाट	-51.50	-51.71	-17.56	141.58	88.60	.98
फतेहपुर मडांव	-51.37	-24.90	58.60	139.85	190.76	26.46
घोसी	-52.97	-39.93	-5.27	166.99	165.76	19.49
बडरॉव	-58.19	-0.14	17.18	141.71	218.79	36.13
कोपागंज	-47.60	-27.28	34.90	214.83	470.90	50.71
परदहा	-49.98	-18.85	-60.08	131.19	183.64	12.78
रतनपुरा	-56.04	-30.93	-3.90	160.66	1234.92	68.13
मुहम्मदाबाद गोहना	-52.91	32.82	-63.28	65.00	288.21	15.25
रानीपुर	-35.87	20.99	-5.39	147.63	282.30	44.10
योग ग्रामीण	-50.23	-18.51	-20.90	141.97	251.15	29.54
योग नगरीय	-5.74	62.92	66.64	162.09	1234.70	134.75
योग जनपद	**-49.44**	**-15.82**	**32.20**	**149.23**	**285.09**	**44.82**

स्रोत–भारतीय जनगणना सार, (1991व 2011)एवं जिला सांख्यिकी पत्रिका (1991व 2011)

इस प्रकार अन्य कर्मकरों की संख्या में 1991 से 2011 के मध्य 149.23 प्रतिशत की वृद्वि हुई है। सर्वाधिक परिवर्तन 214.83 प्रतिशत कोपागंज विकासखण्ड में है एवं न्यूनतम परिवर्तन 65.00 प्रतिशत मुहम्मदाबाद गोहना विकासखण्ड में हैं जिसका कारण युवाओं में शिक्षा के प्रति बढ़ती जागरूकता का परिणाम है। सभी कार्यशील संख्याओ में सीमान्त कर्मकरों की संख्या में सर्वाधिक परिवर्तन 285.09 प्रतिशत हुआ हैं। जिसमे सबसे से अधिक परिवर्तन 1234.93 प्रतिशत विकासखण्ड रतनपुरा में हुआ हैं एवं न्यूनतम परिवर्तन 88.60 प्रतिशत दोहरीघाट विकासखण्ड में हुआ हैं(तालिका–3)। अध्ययन क्षेत्र में कार्यशील जनसंख्या में 50.82 प्रतिशत की वृद्वि हुई है। सर्वाधिक वृद्वि रतनपुरा विकासखण्ड में 68.13 प्रतिशत एवं दोहरीघाट विकासखण्ड में .98 प्रतिशत सबसे कम वृद्वि हुई है। अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण कार्यशील संख्या में 29.54 प्रतिशत की वृद्वि हुई हैं जिसमें समस्त ग्रामीण कार्यशील संख्या में सर्वाधिक वृद्वि सीमान्त कर्मकर की संख्या में 251.15 प्रतिशत पायी गयी जबकि ग्रामीण कृषक कर्मकर की संख्या में –49.44 प्रतिशत की कमी पायी गयी हैं (तालिका–3)। अध्ययन क्षेत्र के नगरीय कार्यशील संख्या में 134.75 प्रतिशत की वृद्वि पायी गयी हैं जिसमें समस्त नगरीय कार्यशील संख्या में नगरीय सीमांन्त कर्मकरों की संख्या में 1234.70 प्रतिशत की वृद्वि पायी गयी हैं जबकि नगरीय कृषक कर्मकर की संख्या में –5.74 प्रतिशत की कमी पायी गयी हैं (तालिका–3)।

निष्कर्ष

अध्ययन क्षेत्र में व्यवसायिक संरचना के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि जनपद में सामाजिक–आर्थिक सेवाओं के विस्तार तथा ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के निरन्तर क्रियान्वयन के फलस्वरूप कृषकों एवं कृषक श्रमिको की संख्या में कमी तथा पारिवारिक उद्योग, अन्यकर्मकर एवं सीमांत कर्मकरों की संख्या में वृद्वि हुई है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *चॉंदना, आर. सी. (2002), जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ0. 242।*
2. *Clark, C.G. (1970), An Overerowded Metropolis: Kingston, Jamaica in Geography and A Crowding World, editer by Wilber Zelinsky and others,Oxfort University Press, New York, p. 305.*
3. *दूबे, कमला कान्त एवं सिंह, महेन्द्र बहादुर (2004), जनसंख्या भूगोल,रावत पब्लिकेशन्स जयपुर एवं नई दिल्ली, पृ0 204।*
4. *कुमार, संदीप. (2007), भारत की बढ़ती आबादी, करूक्षेत्र, वर्ष–53, अंक–9, पृ0.8।*
5. *मौर्य, एस. डी. (2005), जनसंख्या भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद,पृ0. 250।*
6. *मौर्य, एस. डी. (2009), जनसंख्या भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद,पृ0. 234।*
7. *सिंह, ए. पी. (2017), जनपद सुल्तानपुर की जनांकिकीय विशेषताएँ, इण्टरनेशनल जर्नल आफ एडवांस एजुकेशन रीसर्च, नयी दिल्ली. वोल्यूम–2,पृ0. 370–372।*
8. *Trewartha, G.T.(1959), A Geography of Population, World Patterns, john wiley & sons, New York, pp.171*
9. *सेन्सस आफ इण्डिया, (2011),डिस्ट्रिक्ट सेन्सस हेन्ड, मऊ डिस्ट्रिक्ट।*
10. *जिला सांख्यिकी पत्रिका, (1995–2011) जनपद मऊ।*